समाज में विभिन्नता ⇒

हमारी सम्पूर्ण प्रकृति तमाम विविधताओं से भरी पड़ी है। यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के जीवों, पेड़-पौधों, स्थलाकृतियों आदि के रूप में यह विविधता ही प्रकृति का सौन्दर्य ही हमारे समाज में भिन्न-भिन्न रूप-रंग, क्षमता, प्रकृति, भाषा, वेशभूषा खान-पान, आचार-व्यवहार, आस्था-मान्यता, धर्म-सम्प्रदाय आदि से सम्बन्धित विविध व्यक्तियों व समुदायों का समूह है। यही विविधता हमारे समाज की खूबसूरती है। हमारे समाज में विद्यमान विभिन्न समुदायों व लोगों की क्षमताएँ व खासियत अलग-अलग है। एक लोकतान्त्रिक एकता व व्यवस्था की यह भूमिका होनी चाहिए कि इन विविध जनों व समुदायों के विकास व उन्हे एक बेहतर जीवन जीने की व्यवस्थाओं को बिना भेद-भाव के उपलब्ध कराये। परन्तु हमारे समाज ने मानव सभ्यता के विकास क्रम में सत्ता व व्यवस्था के भिन्न-भिन्न रूपों को देखा और उनवर्चस्ववादी ताकतों के प्रत्यक्ष या परोक्ष व्यवहार द्वारा विकास के साधनो के असमान वितरण से उत्पन्न हुई वह स्थिति है जिसमे एक ही समाज के कुछ भिन्न-भिन्न जन व समुदाय विकास की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में रहने को बाध्य होते है।

यदि हम इस विभिन्नता व असमानता को शैक्षिक सन्दर्भ में देखें तो हमारे देश मे विभिन्नताओं की भरमार है। यह विभिन्नता प्रकृति के साथ-साथ निवास कर रहे लोगों में भी ज्यादा है। कई मान्यताओं, विश्वासों, लोक परम्पराओं, पद्धतियों, रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा तथा अन्य कई सामाजिक-सांस्कृतिक परम्पराओं वाले लोग इस देश मे निवास करते हैं। शिक्षा के संस्थानो में मौजूद लोग भी इसी विभिन्नता से युक्त हैं। अतः हमें शैक्षिक वातावरण में अवश्य इन विभिन्नताओं का सम्मान करना चाहिए क्योंकि विभिन्नता इस समाज की पूँजी है इसका सौन्दर्य है जिसे सँजोना शिक्षा का कर्तव्य होना चाहिए

Scanned with CamScanner

हम प्रायः विद्यालय में इस प्रकार की विविधताओं का निरन्तर अनुभव करते रहते है। परन्तु एक शिक्षक होने के नाते हम यदि दो भिन्न आर्थिक स्थिति, वेशभूषा, खान-पान या लोक परम्परा वाले विद्यार्थियों में भेदभाव करना व असमान व्यवहार करना शुरू कर दें तो कैसी स्थिति उत्पन्न होगी? निश्चय ही यह स्थिति किसी बाल के विकास व उसके आत्म सम्प्रत्यय के निर्माण को प्रभावित करेगी। अतः एक शिक्षक का दायित्व बनता है कि वह एक ऐसे शैक्षिक माहौल का निर्माण करें जिसमें विविधताओं का सम्मान हो किसी भी प्रकार की असमानता का व्यवहार नहो तथा एक समावेशी वातावरण में बच्चों को विकसित होने का अवसर मिले।

असमानता

यदि हम असमानता को सामाजिक सन्दर्भ में देखें तो इसका अर्थ है व्यक्तियों के आहार-विहार, आचार-विचार और उनकी संस्कृति (भाषा-साहित्य, धर्म दर्शन एवं रीति-रिवाज) में अन्तर होना और उनकी आर्थिक स्थिति में अन्तर होना और राज्य (शासन) के सन्दर्भ में इसका अर्थ है। राज्य द्वारा समाज के सभी व्यक्तियों को ~~बिना किसी~~ भेदभाव के समान सुविधाएँ प्रदान करना व उन्हे विकास के समान अवसर न देना। वैसे तो भारतीय संविधान में समाज के सभी व्यक्तियों के लिए समान अधिकार व समान कर्त्तव्य निश्चित है और सभी को अपना विकास करने के समान अवसर प्रदान करने की घोषणा है, परन्तु व्यवहार में इन सब में आज भी असमानता है। अतः शिक्षा जिसे मानव व मानव के मध्य व्याप्त हर विभेद को नष्ट करने का शस्त्र माना जाता है, झूठा सिद्ध होता दिखाई देता है। विभिन्न अध्ययन भी यह पुष्टि करते है कि

Scanned with CamScanner

"शिक्षण संस्थाओं में जातीय भेदभाव के चलते छात्र केवल हीन भावना के शिकार हो रहे हैं बल्कि कई बार तो अपमान और उपेक्षा के चलते अपनी पढ़ाई को बीच में ही छोड़ देते हैं। शिक्षा में असमानता का शिकार केवल कमजोर वर्ग के बच्चे व दलित बच्चे ही नहीं हो रहे हैं बल्कि बालिकाएं व विशेष बच्चे भी इसकी परिधि में आ रहे हैं।"

Scanned with CamScanner